सूरह — एक कहानी

सूरह अल-म'आरिज

ऊपर जाने की सीढ़ियाँ

पूरा सफ़र — बे-चैन दिल और उसका इलाज —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 70 • 44 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

सअल साइलुम्-बि-'अज़ाबिंव्-वाक़ि'
1. एक माँगने वाले ने होने वाले अज़ाब की माँग की।

फ़स्बिर सब्रन जमीला
5. तो ख़ूबसूरत सब्र करो।

इन्नल्-इंसान ख़ुलिक़ हलू'आ
19. बेशक इंसान बे-सब्रा पैदा किया गया है।

इल्लल्-मुसल्लीन
22. सिवाए नमाज़ पढ़ने वालों के।

वल्लज़ीन हुम 'अला सलातिहिम युहाफ़िज़ून
34. और जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।

उलाइक फ़ी जन्नातिम्-मुक्रमून
35. यही लोग बाग़ों में इज़्ज़त के साथ होंगे।

वो आदमी जिसने अपनी ही सज़ा माँगी

बेटा, यह सूरह अब तक की सबसे अजीब दरख़्वास्तों में से एक से शुरू होती है: एक आदमी अपनी ही तबाही का मुतालबा कर रहा है।

'स-अल साइलुम्-बि-'अज़ाबिंव्-वाक़ि' — एक माँगने वाले ने एक ऐसे अज़ाब की माँग की जो होने वाला है।' तफ़्सीर की किताबें बयान करती हैं कि ये मक्का के मज़ाक़ उड़ाने वालों ने कहा — एक रिवायत अन-नज़्र इब्ने अल-हारिस का नाम लेती है, जो एक बार खड़ा हो कर बोला: ऐ अल्लाह, अगर ये आपकी तरफ़ से सच है, तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे! हिदायत की दुआ नहीं, बेटा — एक चैलेंज।

और अल्लाह का जवाब होला देने वाले सुकून के साथ है: 'लिल्-काफ़िरीन लैस लहू दाफ़ि' — मुनकिरों के लिए; उसे टालने वाला कोई नहीं।' फिर: 'मिनल्लाहि ज़िल्-म'आरिज — अल्लाह की तरफ़ से, जो ऊपर जाने की सीढ़ियों के मालिक हैं' — और

सूरह का नाम इसी से है।

और फिर अल्लाह उनके ताने में छुपे असल सवाल का जवाब देते हैं — 'देर क्यों?' — एक ऐसे पैमाने से जो इंसानी बे-सब्री को ख़ामोश कर देता है: 'त'अ्रुजुल्-मलाइकतु वर्-रूहु इलैहि फ़ी यौमिन कान मिक़्दारूहू ख़म्सीन अल्फ़ सनह — फ़रिश्ते और रूह उसकी तरफ़ एक ऐसे दिन में चढ़ते हैं जिसकी मिक़्दार पचास हज़ार साल है।'

बेटा, समझिए ये क्या सिखा रहा है। हम वक़्त को कलाई की घड़ियों से नापते हैं; एक दहाई को 'लंबी' कहते हैं। मगर अल्लाह के हाँ, एक ही दिन हमारी गिनती के पचास हज़ार साल में नापा जाता है। तो जब कोई कहे, 'अगर अज़ाब सच है तो अब तक क्यों नहीं आया?' — वो एक हमेशगी वाले टाइमटेबल को स्टॉपवॉच से नाप रहा है। देर शक नहीं है, बेटा; ये पैमाने का फ़र्क़ है। और उनकी देर भी रहमत है: उसका हर घंटा तौबा के लिए एक खुला दरवाज़ा है।

ख़ूबसूरत सब्र

और फिर, अपने रसूल ﷺ से, और हर उस मोमिन से जो किसी वादे के आने का मुंतज़िर है: 'फ़स्बिर सब्रन जमीला — तो ख़ूबसूरत सब्र करो।'

बेटा, इस जुमले को सीख लीजिए और इसे अपने किरदार को ढालने दीजिए। सब्र-ए-जमील — ख़ूबसूरत सब्र — वो सब्र है जिसमें मख़लूक़ से कोई शिकायत नहीं, कोई तल्ख़ी नहीं, कोई बिगड़ा हुआ चेहरा नहीं। उलमा ने इसे ऐसा सब्र कहा जिसमें न घबराहट हो, न लोगों से अपने रब की शिकायत। ये या'क़ूब (अलैहि0) का सब्र है, जिन्होंने कहा: 'मैं तो अपने ग़म और परेशानी की शिकायत **सिर्फ़ अल्लाह** से करता हूँ।'

एक सब्र बद-सूरत होता है, बेटा — वो जो नाराज़-नाराज़ हो कर बर्दाश्त करता है, हिसाब रखता है, अपने ज़ख़्म सब को दिखाता फिरता है। और एक सब्र ख़ूबसूरत होता है — ख़ामोश, बा-वक़ार, फिर भी इबादत करता हुआ, फिर भी लोगों से मुस्कुराता हुआ, अपनी शिकायत सिर्फ़ ऊपर ले जा कर। अल्लाह ने दूसरा माँगा।

'इन्नहुम यरौनहू ब'ईदा — बेशक वो उसे दूर समझते हैं — व नराहु क़रीबा — मगर हम उसे क़रीब देखते हैं।' बेटा, नज़र का फ़र्क़ महसूस कीजिए: जिसे हमारी बे-सब्री 'दूर' कहती है, उसे अल्लाह 'क़रीब' कहते हैं।

वो दिन जब कोई दोस्त अपने दोस्त का हाल न पूछेगा

फिर सूरह वो दिन दिखाती है: 'यौम तकूनुस्-समा-उ कल्-मुह्ल — उस दिन आसमान पिघले हुए ताँबे जैसा होगा — व तकूनुल्-जिबालु कल्-'इह्न — और पहाड़ धुनी हुई ऊन जैसे होंगे।'

'व ला यस्अलु हमीमुन हमीमा — और कोई दोस्त अपने दोस्त का हाल न पूछेगा।' बेटा, इस लाइन के साथ एक लम्हा बैठिए। ये नहीं कि दोस्तों को बोलने से मना किया जाएगा — बल्कि ये कि किसी को पूछने का **ख़याल तक न आएगा**। 'युबस्सरूनहुम' — वो एक दूसरे के सामने लाए जाएँगे; वो एक दूसरे को देखेंगे, और फिर भी न पूछेंगे।

और फिर वो मायूसी भरी पेश-कश: मुजरिम चाहेगा कि उस दिन के अज़ाब से ख़ुद को फ़िद्या दे कर बचा ले 'बि-बनीहि — अपनी औलाद से — व साहिबतिही व अख़ीह — और अपनी बीवी और भाई से — व फ़सीलतिहिल्-लती तु'वीह — और अपने ख़ानदान से जिसने उसे पनाह दी — व मन फ़िल्-अर्ज़ि जमी'अन सुम्म युन्जीह — और ज़मीन के सब लोगों से, अगर फिर वो उसे बचा ले।'

बेटा, देखिए उस दिन आदमी क्या तिजारत करने को तैयार होगा: ठीक वही लोग जिनकी हिफ़ाज़त, जिनके इंतिज़ाम, और जिनके लिए गुनाह करते हुए उसने अपनी ज़िंदगी गुज़ारी। वो रिश्वतें जो उसने 'ख़ानदान के लिए' लीं, वो समझौते जो उसने 'बच्चों के लिए' किए — उस दिन वो उन सब को सौंप देगा ताकि आग के एक लम्हे से बच जाए। और वो क़ुबूल नहीं किया जाएगा: 'कल्ला — हरगिज़ नहीं!'

सूरह बढ़ाती है कि वो आग 'पुकारती' है — 'तद'ऊ मन अद्बर व तवल्ला, व जम'अ फ़-औ'आ' — वो उसे पुकारती है जिसने पीठ फेरी और मुँह मोड़ा, और जमा किया और समेट कर रख लिया। दो आदतें, बेटा: मुँह फेरना, और जमा कर के ताला लगा देना।

इंसानी दिल का एक्स-रे

और अब, बेटा, वो हिस्सा आता है जो इस सूरह को न-भूलने वाला बना देता है — तीन आयतें जिनमें अल्लाह कच्चे इंसानी नफ़्स की तस्वीर किसी भी नफ़्सियात की किताब से ज़्यादा दुरुस्त खींचते हैं:

'इन्नल्-इंसान ख़ुलिक़ हलू'आ — बेशक इंसान 'हलू'आ' पैदा किया गया — बे-चैन, बे-सब्रा, बे-क़रार, लालची। इज़ा मस्सहुश्-शर्रु जज़ू'आ — जब उसे बुराई छू ले, तो वो मायूस हो जाता है। व इज़ा मस्सहुल्-ख़ैरु मनू'आ — और जब उसे भलाई छू ले, तो वो रोक लेने वाला हो जाता है।'

बेटा, उन दो लाइनों में अपनी ज़िंदगी पढ़िए। एक बुरा नतीजा, कारोबार में एक नुक़सान, एक सख़्त बात — और हम एलान कर देते हैं कि हमारी ज़िंदगी तबाह हो गई; नींद उड़ जाती है, कहते हैं 'मेरे साथ ही क्यों'। ये **जज़ू'** है। फिर एक अच्छा महीना आता है, खाता भर जाता है, प्रमोशन मिल जाता है — और फ़ौरन मुट्ठी बंद हो जाती है: मेरा पैसा, मेरी कामयाबी, मेरा वक़्त। ये **मनू'** है।

मुश्किल में घबराहट, आसानी में बुख़्ल — बेटा, ये इंसानी नफ़्स की फ़ैक्ट्री सेटिंग है। अल्लाह यहाँ हमारी तौहीन नहीं कर रहे; वो हमारी तशख़ीस कर रहे हैं, जैसे एक डॉक्टर नुस्ख़ा लिखने से पहले मर्ज़ का नाम लेता है।

और फिर सूरह का सबसे उम्मीद-अफ़ज़ा लफ़्ज़ आता है — एक छोटा लफ़्ज़ जो सब कुछ बदल देता है: **'इल्ला' — सिवाए।**

'इल्लल्-मुसल्लीन — सिवाए नमाज़ पढ़ने वालों के — अल्लज़ीन हुम 'अला सलातिहिम दाइमून — जो अपनी नमाज़ पर क़ायम रहते हैं।' बेटा, इलाज नमाज़ है — मगर 'दाइमून', मुसलसल, मुस्तक़िल। मूड वाली नहीं, रमज़ान वाली नहीं — क़ायम।

और फिर अल्लाह उस इलाज को खोल कर आठ ख़ूबियों में बयान करते हैं। **एक:** नमाज़ पर क़ायम। **दो:** 'वल्लज़ीन फ़ी अम्वालिहिम हक़्क़ुम्-म'लूम — जिनके मालों में एक **मालूम हक़** है — लिस्-साइलि वल्-महरूम — माँगने वाले के लिए और उसके लिए जो महरूम है (मगर माँगता नहीं)।' बेटा, 'मालूम हक़' — एक तय शुदा

हिस्सा, मूड पर नहीं, बजट में। और 'महरूम' — वो जो ब-वक़ार है और कभी हाथ नहीं फैलाता; उसे तलाश करना पड़ता है।

तीन: 'जो बदले के दिन पर ईमान रखते हैं।' **चार:** 'जो अपने रब के अज़ाब से डरते रहते हैं — बेशक उनके रब का अज़ाब ऐसी चीज़ नहीं जिस से बे-ख़ौफ़ हुआ जाए।' बेटा, ग़ौर कीजिए: नेक लोग भी कभी 'काफ़ी महफ़ूज़' महसूस नहीं करते। ख़ौफ़ और उम्मीद दो पर हैं; एक पर वाला परिंदा गोल गोल घूमता रहता है।

पाँच: 'जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं।' **छह:** 'जो अपनी अमानतों और अपने वादों का ख़याल रखते हैं' — रखे हुए राज़, पूरे किए हुए वादे, बच्चों से किए वादे तक याद। **सात:** 'जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं' — जो दूसरों के बारे में बोलते हुए सच को मोड़ते नहीं, चाहे ख़ुद अपने या अपनी क़ौम के ख़िलाफ़ हो।

और **आठ** — देखिए फ़ेहरिस्त ठीक वहीं बंद होती है जहाँ खुली थी: 'वल्लज़ीन हुम 'अला सलातिहिम युहाफ़िज़ून — और जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।'

बेटा, ये बनावट जान-बूझ कर और ख़ूबसूरत है: नमाज़ अच्छे किरदार की किताब का पहला और आख़िरी कवर है; बाक़ी सब कुछ उन के दरमियान बंधा है। पहले 'दाइमून' — उस पर क़ायम; आख़िर में 'युहाफ़िज़ून' — उसकी हिफ़ाज़त: उसके औक़ात, उसका ख़ुशू', एक मसरूफ़ दिन में उसकी जगह। अगर ये दो कवर मज़बूत हों, तो अंदर के सफ़हे तरतीब में रहते हैं।

और उनका नतीजा: 'उलाइक फ़ी जन्नातिम्-मुक्रमून — यही लोग बाग़ों में इज़्ज़त के साथ होंगे।'

आपकी तरफ़ दौड़ते हुए, गर्दनें उठाए

फिर सूरह मुनकिरों की तरफ़ एक ऐसे मंज़र के साथ लौटती है जिसमें एक अजीब, जाना-पहचाना रंग है: 'फ़-मालिल्-लज़ीन कफ़रू क़िबलक मुह्ति'ईन — उन मुनकिरों को क्या हो गया जो आपकी तरफ़ दौड़ते हुए, गर्दनें उठाए आ रहे हैं — 'अनिल्-यमीनि व 'अनिश्-शिमालि 'इज़ीन — दाएँ से और बाएँ से, अलग अलग

गिरोहों में?'

मज़ाक़ उड़ाने वाले नबी ﷺ के गिर्द हलक़े बाँध कर जमा होते, झुक कर, बे-ताब — सीखने के लिए नहीं, बेटा, बल्कि तंज़ करने और अपना दिल-बहलाने के लिए। और फिर क़ुरआन उनका अंदरूनी दावा बे-नक़ाब करता है: 'अ यत्म'उ कुल्लुम्-रि-इम्-मिन्हुम अंय्-युद्ख़ल जन्नत न'ईम — क्या उन में से हर एक तमन्ना रखता है कि वो ने'मत के बाग़ में दाख़िल किया जाए?'

बेटा, ये गुमान मक्का में नहीं मरा। ये आज भी हर उस दिल में ज़िंदा है जो कहता है 'अल्लाह तो ग़फ़ूर हैं' मगर उनकी तरफ़ एक उँगली तक नहीं हिलाता। और अल्लाह इसे हमारी हक़ारत की एक तबाह कुन याद-दहानी से जवाब देते हैं: 'कल्ला — हरगिज़ नहीं! इन्ना ख़लक़्नाहुम मिम्-मा य'अ्लमून — बेशक हमने उन्हें उस चीज़ से बनाया जो वो जानते हैं' — एक हक़ीर बूँद से।

और फिर एक क़सम: 'फ़-ला उक़्सिमु बि-रब्बिल्-मशारिक़ि वल्-मग़ारिब — तो मैं मशरिक़ों और मग़रिबों के रब की क़सम खाता हूँ — इन्ना ल-क़ादिरून 'अला अन नुबद्दिल ख़ैरम्-मिन्हुम — बेशक हम क़ादिर हैं कि उनसे बेहतर लोग उनकी जगह ले आएँ — व मा नह्नु बि-मस्बूक़ीन — और हमें कोई मात नहीं दे सकता।'

तो सूरह इस पर ख़त्म होती है: 'फ़-ज़र्हुम यख़ूज़ू व यल'अबू — तो उन्हें छोड़ दो कि फ़ुज़ूल बातों और खेल-तमाशे में पड़े रहें — हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्-लज़ी यू'अदून — यहाँ तक कि वो अपने उस दिन से मिलें जिसका उनसे वादा है।' और वो दिन: 'यौम यख़्रुजून मिनल्-अज्दासि सिरा'आ — जिस दिन वो क़ब्रों से तेज़ी से निकलेंगे — क-अन्नहुम इला नुसुबिंय्-यूफ़िज़ून — गोया वो किसी बुत की तरफ़ दौड़ रहे हों' — मगर अब 'ख़ाशि'अतन अब्सारुहुम' — आँखें झुकी हुई — 'तर्हक़ुहुम ज़िल्लह' — ज़िल्लत उन्हें ढाँपे हुए।

बेटा, उस शानदार इंसाफ़ को देखिए: वही तवानाई जिस से वो इस दुनिया में बातिल की तरफ़ दौड़े, वही तवानाई है जिस से उन्हें अगली दुनिया में फ़ैसले की तरफ़ दौड़ाया जाएगा। **ज़िंदगी में आप जिस सिम्त दौड़ते हैं, आप उस सिम्त की मश्क़ कर रहे हैं

जिस में आप तब दौड़ेंगे।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. कभी अल्लाह को चैलेंज मत कीजिए — और देर को कभी ग़ैर-हाज़िरी मत समझिए: उन के हाँ एक दिन पचास हज़ार साल में नापा जाता है।

2. सब्र-ए-जमील की मश्क़ कीजिए: लोगों से शिकायत के बग़ैर सब्र, तल्ख़ी के बग़ैर, अपना ग़म सिर्फ़ ऊपर ले जा कर।

3. उस दिन कोई दोस्त अपने दोस्त का हाल तक न पूछेगा — तो 'ख़ानदान के लिए' गुनाह करना बंद कीजिए; वो आपका फ़िद्या नहीं बन सकते।

4. अपनी फ़ैक्ट्री सेटिंग जान लीजिए — नुक़सान में घबराहट, फ़ायदे में तंगी — और वो इलाज जो अल्लाह ने बताया: मुसलसल नमाज़।

5. अपनी आमदनी में से एक 'मालूम हक़' बजट कीजिए माँगने वाले के लिए, और ख़ास कर उस के लिए जो माँगने में बहुत बा-इज़्ज़त है।

6. दोनों पर थाम कर रखिए: कभी अपने रब के अज़ाब से बे-ख़ौफ़ मत होइए, कभी उनकी रहमत से मायूस मत होइए।

7. अमानतों, वादों और गवाही की उतनी ही सख़्ती से हिफ़ाज़त कीजिए जितनी नमाज़ की — वही लोग दोनों करते बयान हुए हैं।

या अल्लाह, हमारे दिलों को घबराहट और लालच से शिफ़ा दीजिए, हमें नमाज़ पर क़ायम और माल में सख़ी बना दीजिए, और आपका वादा आने तक हमें ख़ूबसूरत सब्र अता फ़रमाइए। आमीन।